शक्ति

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन एवं उपासना)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

प्रस्तुत पुनर्मुद्रणकी १,००० प्रतियां एवं
अबतक इस लघुग्रन्थकी १३,३०० प्रतियां प्रकाशित !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मके प्रसार हेतु 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

३. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : ३.९.२०२३ तक गुरुकृपायोगानुसार साधना कर १२५ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४६ साधक सन्तत्व की दिशामें अग्रसर !

४. गुरुकुलसमान 'सनातन आश्रमों'की निर्मिति !

५. ग्रन्थ-रचना एवं प्रकाशनकार्य : सितम्बर २०२३ तक ३६२ ग्रन्थोंकी १७ भाषाओंमें ९४ लाख प्रतियां प्रकाशित एवं ५,००० से अधिक ग्रन्थ होंगे इतना लेखन प्रकाशनकी प्रतीक्षामें !

६. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध

७. अपनी देह (नख, केश एवं त्वचा) तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य एवं अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

८. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

९. कलाका सात्त्विक प्रस्तुतीकरण होने हेतु शोध

१०. ३.९.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२७ और अन्य ८९८ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

११. 'सनातन प्रभात'के माध्यमसे पत्रकारिताका कार्य

१२. भीषण आपातकालका विचार द्रष्टापनसे अनेक वर्ष पहले ही कर आपातकालमें प्राणरक्षा हेतु आवश्यक विविध समाधान-योजनाओंके विषयमें ग्रन्थ, नियतकालिक, जालस्थल आदि माध्यमोंद्वारा मार्गदर्शन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु देखें – 'www.Sanatan.org')

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

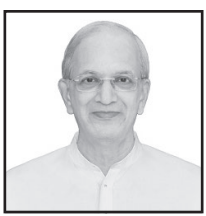

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥

– जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९६

डॉ. जयंत आठवलेजीकी ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है । इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानोंपर वैसा उल्लेख किया है। **– (पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता** (२४.७.२०२२)

अनुक्रमणिका

卐 शक्तिसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व ८

卐 भूमिका ९

१. 'शक्ति' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ १०

२. शक्तियोंके नाम, सामर्थ्य एवं गुणोंसे सम्बन्धित भ्रान्ति १०

३. आद्याशक्ति १२

४. शक्तिके प्रकार १२

५. कार्य २२

६. सनातन-निर्मित देवीका सात्त्विक 'चित्र', 'मूर्ति (संकल्पित)' एवं 'नामजप-पट्टियां' २३

७. तीन प्रमुख शक्तिपीठ २९

८. उपासना २९

९. कुछ विशिष्ट उपासक ६०

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ६१

शक्तिसे सम्बन्धित विवेचनका महत्त्व

आध्यात्मिक उन्नति हेतु 'पिंडसे ब्रह्मांडतक'की यात्रा पूर्ण करनी पडती है । इसका अर्थ है कि जो तत्त्व 'ब्रह्मांड' अर्थात शिव में हैं, उनका 'पिंड' अर्थात जीवमें आना आवश्यक है । तभी जीव शिवसे एकरूप हो सकता है । पानीकी बूंदमें तेलका थोडासा भी अंश हो, तो वह पानीसे एकरूप नहीं हो सकता; उसी प्रकार जबतक शक्तिभक्त, शक्तिकी सर्व विशेषताओंको आत्मसात नहीं कर लेता, तबतक वह शक्तिसे एकरूप नहीं हो सकता; अर्थात उसकी सायुज्य मुक्ति नहीं हो सकती । इस सन्दर्भमें इस लघुग्रन्थमें दी शक्तिकी विशेषताएं साधकोंके लिए निश्चित ही मार्गदर्शक सिद्ध होंगी । श्रीविष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्री हनुमान, भगवान शिव, श्री गणपति, दत्तात्रेय देवता एवं श्री सरस्वती से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान देनेवाले सनातनके लघुग्रन्थ भी उपलब्ध हैं ।

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी या सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्मित होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है, जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें शक्ति से सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है । शक्तिके विषयमें विस्तृत विवेचन सनातनके ग्रन्थ 'शक्ति (२ खण्ड)' में दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह लघुग्रन्थ पढकर हर व्यक्तिको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

सात्त्विक एवं भावजागृति हेतु उपयुक्त
सनातन उदबत्ती (अगरबत्ती)